जिस नजर से आप दुनिया को देखोगे, आपको दुनिया वैसी ही नजर आएगी।
–अज्ञात।

पेज थ्री
www.page3news.in

आईपीसीसी की ताजा रिपोर्ट

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के साथ ही अनुकूलन से जुड़े पहलुओं पर ध्यान दिया गया है। आईपीसीसी के इस छठे आकलन का पहला हिस्सा पिछले साल अगस्त में जारी हुआ था। इसका तीसरा और अंतिम हिस्सा अगले महीने यानी अप्रैल में जारी होना है।

मोहन बिष्ट।।

इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) के छठे आकलन की दूसरी रिपोर्ट ने पर्यावरण संबंधी उन चिंताओं को और ज्यादा स्पष्टता और सटीकता से चिह्नित किया है, जो पिछले कुछ समय से लगातार बढ़ती जा रही हैं। जारी हुए इस दूसरे हिस्से में जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों के साथ ही अनुकूलन से जुड़े पहलुओं पर ध्यान दिया गया है। आईपीसीसी के इस छठे आकलन का पहला हिस्सा पिछले साल अगस्त में जारी हुआ था। इसका तीसरा और अंतिम हिस्सा अगले महीने यानी अप्रैल में जारी होना है। पहले हिस्से में जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक आधारों की पड़ताल की गई थी तो तीसरे हिस्से में उत्सर्जन में कमी की संभावनाएं टटोली जाएंगी। यह भी ध्यान देने वाली बात है कि क्लाइमेट चेंज से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर समग्रता से विचार करके विस्तृत रिपोर्ट जारी करने का यह सिलसिला 1990 से शुरू हुआ। 1995, 2001, 2007 और 2015 में क्रमशरू दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवें आकलन के बाद यह छठा आकलन सामने आया है।

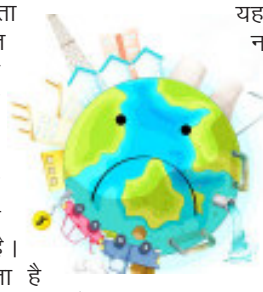

ऊपरी तौर पर ऐसा लगता है कि हर रिपोर्ट बार–बार उन्हीं खतरों का जिक्र करती रही है, जिनका कोई हल सामने आता नहीं दिख रहा। उलटे, हर रिपोर्ट के साथ वे खतरे और ज्यादा बढ़े हुए नजर आते हैं।

यह बात एक हद तक सही भी है और किसी न किसी रूप में इस ख्याल के लिए गुंजाइश बनाती है कि कहीं यह पूरी कवायद निरर्थक तो नहीं होती जा रही। मगर नहीं। क्लाइमेट चेंज और ग्लोबल वॉर्मिंग की विशाल चुनौतियों के सामने हमारे प्रयास भले ही नाकाफी साबित हुए हों, इसमें दो राय नहीं हो सकती कि अगर दुनिया इन चुनौतियों को लेकर एक तरह की सर्वसम्मति तक पहुंच सकी है और पेरिस एग्रीमेंट जैसा समझौता संभव हुआ है तो उसके पीछे आईपीसीसी के इन आकलनों की निर्णायक भूमिका रही है। और यही आकलन अब हमें बता रहे हैं कि पूर्व औद्योगिक युग के मुकाबले तापमान में इजाफे को 2 फीसदी तक सीमित करने का लक्ष्य अब निरर्थक सा हो चुका है। इसे 1.5 तक सीमित रखने का लक्ष्य ही रखना होगा। यह भी कि इस कठिन लक्ष्य को साधने की कोशिश काफी नहीं। इसे साध लें, तब भी क्लाइमेट चेंज और ग्लोबल वॉर्मिंग के दुष्प्रभाव थोड़ा कम भले हो जाएं, पूरी तरह समाप्त नहीं होंगे।

इसलिए हमें अनुकूलन से जुड़े पहलुओं पर विशेष ध्यान देते हुए कृषि और उद्योग संबंधी नीतियों में उन बदलावों पर काम करना चाहिए, जो इन्हें उन दुष्प्रभावों से उपजी स्थितियों के अनुरूप ढाल सकें। अगर अब भी हमने ढीला–ढाला रवैया जारी रखा तो समुद्र के जलस्तर में इजाफा, भीषण गर्मी और लू के थपेड़े तथा बेमौसम बारिश जैसी आपदाएं हमारा जीना मुश्किल कर देंगी।

सूर्य ग्रहण

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

थेल्स 585 ईसा पूर्व के आसपास एक सूर्य ग्रहण की भविष्यवाणी करने वाला पहला व्यक्ति था। इस खगोलीय उपलब्धि के अलावा, प्राचीन ग्रीक वासियों ने उन्हें पहले गणितज्ञ के रूप में माना और उन्हें ज्यामिति की अवधारणा के लिए जिम्मेदार ठहराया. उनका दावा है कि पानी प्राथमिक प्रकार का पदार्थ है, जिसने उन्हें बाद में प्राकृतिक दर्शन के रूप में जाना जाता है।. थेल्स के अनुसार, शुरुआत में केवल पानी था और यह आदिम आर्द्रता दुनिया को विकसित करने के लिए शुरुआती बिंदु था जैसा कि आज जाना जाता है। यह कहा जाता है कि थेल्स ने यह भी कहा कि सभी घटनाओं को देवताओं के डिजाइन द्वारा नियंत्रित किया जाता है और मैग्नेट के पास लोहे को स्थानांतरित करने में सक्षम होने के लिए एक आत्मा है। मैंने कुछ कलाकृतियों को भी तैयार किया, जिनमें से सौर घड़ी और भूकंप की भविष्यवाणी करने वाली एक मशीन बाहर खड़ी थी।

संपादकीय

मंथन का विषय

प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस 2017 का भी प्रदर्शन दोहराने में कामयाब नहीं हुईं। उसने सिर्फ दो सीटें मिली जबकि पांच सीटों का घाटा हुआ। कांग्रेस को ढाई फीसद मत हासिल हुए। कांग्रेस और उसके शीर्ष नेतृत्व के लिए यह मंथन का विषय है। निश्चित रूप से उत्तर प्रदेश की राजनीति में भाजपा ने नया इतिहास लिखा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुलडोजर बाबा के नाम से प्रसिद्ध हो गए हैं। भाजपा को जीत दिलाने में उसका सांगठनिक अनुशासन, सामूहिक प्रयास और सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास एवं सबका प्रयास जीत दिलाने में कामयाब हुए हैं। राशन, सुशासन का मुद्दा भी अहम रहा है। भाजपा के मजबूत सांगठनिक ढांचे से यह कामयाबी मिली है।भाजपा अपने संगठन को मजबूत बनाने के लिए कोई भी कोर कसर नहीं छोड़ती है। पार्टी के सांगठनिक ढांचे में सबको जिम्मेदारी दी जाती है। उसकी राजनीतिक सफलता के पीछे यह भी आम कारण रहे हैं। उत्तर प्रदेश में भाजपा आम आदमी का विश्वास जीतने में बेहद सफल रही है। राज्य में जातीय मिथक को तोड़ने में भी वह सफल हुई है। भाजपा को काफी संख्या में पिछड़ों ने भी वोटिंग किया है। जिसकी वजह से वह दोबारा सत्ता में लौटी है।

भाजपा की वापसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता बरकरार है। भाजपा जातिवाद की राजनीति को ध्वस्त कर पुनः सत्ता में वापसी की है। उत्तर प्रदेश की राजनीतिक में यह बहुत बड़ी सफलता है।

प्रभुनाथ शुक्ल।।

उत्तर प्रदेश ने जो राजनीतिक संदेश दिया है अपने आप उसके मायने बेहद अलग है। प्रतिपक्ष की लाख कोशिशों के बावजूद भी भारतीय जनता पार्टी भारी बहुमत से सरकार बनाने में कामयाब रहीं। दोबारा सत्ता में वापसी कर भाजपा ने साफ संदेश दे दिया कि है कि उसके मुकाबले विपक्ष कहीं नहीं ठहरता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता बरकरार है। भाजपा जातिवाद की राजनीति को ध्वस्त कर पुनः सत्ता में वापसी की है। उत्तर प्रदेश की राजनीतिक में यह बहुत बड़ी सफलता है। योगी आदिनाथ ऐसे मुख्यमंत्री हैं जो 37 सालों में दोबारा शपथ ले रहे हैं और सत्ता में वापसी कराएं। कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी का सूपड़ा साफ हो गया है। भाजपा ने कांग्रेस और बहुजन समाज पार्टी के साथ सपा को यह संदेश देने में सफल हुईं है कि प्रदेश में अब विकास विश्वास की राजनीति ही सफल होगी जातिवाद का कोई स्थान नहीं है।

राज्य में भाजपा की वापसी के पहले समाजवादी और बहुजन समाज पार्टी का सियासी दबदबा था। राममंदिर आंदोलन के बाद भाजपा सत्ता में जबरदस्त वापसी कि थी लेकिन मंडल की राजनीति ने उसे गायब कर दिया। राज्य में 90 के दशक के बाद कांग्रेस कि वापसी नहीं हो पाई। 40 साल तक उत्तर प्रदेश की सत्ता में रहने वाली कांग्रेस हर चुनाव में अपना जनाधार खोती चली गई। कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता के लबादे में इतना उलझी कि मंडल–कमंडल की राजनीति में उसका अस्तित्व ही खत्म हो गया। इसके बाद कांग्रेस सत्ता में फिर वापस नहीं हो पाई। उत्तर प्रदेश में 2017 के पहले जातिवादी राजनीति चरम पर थी। राज्य में राम मंदिर आंदोलन के बाद भाजपा की सत्ता में वापसी हुई। लेकिन इसके बाद यहां सपा–बसपा की जातिवादी राजनीति हावी रहीं।लेकिन 2014 में केंद्र की सत्ता में भाजपा की वापसी के बाद जहां राज्य में कांग्रेस खत्म होती चली गई वहीं उत्तर प्रदेश की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी ने जबरदस्त वापसी की।

उत्तर प्रदेश में भाजपा को घेरने के लिए सपा–बसपा कांग्रेस ने कई प्रयोग दुहराए लेकिन उसका कोई खास प्रभाव नहीं दिखा। क्योंकि विपक्ष चाह कर भी आंतरिक रुप से टूटा और बिखरा था जिसका सीधा फायदा भाजपा को मिला। केंद्र और प्रदेश में भाजपा की डबल इंजन की सरकार होने की वजह से विकास पर भी काफी गहरा प्रभाव पड़ा। जिस मुद्दों से कांग्रेस बचती थी भाजपा उसे फ्रंटफुट पर खेला। राम मंदिर, धारा 370, तीन तलाक, एनआरसी और हिंदुत्व जैसे मुद्दों को धार दिया। 'सबका साथ सबका विकास' वाले मंत्र को अपनाकर भाजपा आगे बढ़ी और कामयाब हुईं। उत्तर प्रदेश में भाजपा जितनी मजबूत हुई विपक्ष उतना कमजोर हुआ। वर्तमान समय में बदले सियासी हालात में विपक्ष को गंभीरता से विचार करना होगा। उत्तर प्रदेश में भाजपा के मुकाबले विपक्ष कहीं दिख नहीं रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 2022 के आम चुनाव में भाजपा की प्रचंड जीत ने 2024 का भी मार्ग प्रशस्त कर दिया है। क्योंकि विपक्ष के तमाम प्रयासों के बावजूद भी भाजपा को घेरने में वह कामयाब नहीं हो सका है।

यूपी में बहुजन समाज पार्टी दलित विचारधारा की मुख्य पार्टी मानी जाती रही। मायावती चार–चार बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। लेकिन बहुजन समाज पार्टी इतनी जल्द कमजोर हो जाएगी इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। देश में आज जिस तरह कांग्रेस गुजर रहीं है वहीं हालत बहुजन समाज पार्टी की है। लेकिन इस बार के आम चुनाव में बहुजन समाज पार्टी की जो दुर्गति हुई है वह चिंतनीय।

सूडोकु बवाल-5182

मध्यम

4	6		3		8	9		7
	1		9		6		5	4
						8		
	4		5				8	
2		5		4		6		1
	3				1		7	
		3						
5	9		7		2		6	
7		6	4		3		9	2

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकु बवाल -5180 का हल

5	7	2	3	8	4	1	9	6
8	6	1	9	2	5	7	3	4
3	9	4	1	6	7	5	8	2
2	5	7	4	1	3	8	6	9
4	8	6	5	9	2	3	7	1
1	3	9	6	7	8	4	2	5
6	2	3	7	4	1	9	5	8
9	4	5	8	3	6	2	1	7
7	1	8	2	5	9	6	4	3

अपना ब्लॉग

दलित विचारधारा की मुख्य पार्टी का अस्तित्व खत्म

मोहन। चुनाव परिणाम को देखकर साफ होता है कि दलित विचारधारा की मुख्य पार्टी का अस्तित्व खत्म हो चला है। मायावती अभी तक कोई सियासी उत्तराधिकारी नहीं दे सकी हैं। साल 2017 में 19 सीटों पर जीत हासिल करने वाली बहुजन समाज पार्टी एक सीट पर सिमट गई। उसे करीब 12.9 फीसदी मत मिले। समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव ने जमीनी मेहनत किया लेकिन उनके कार्यकर्ताओं ने जोश में होश खो दिया। अति उत्साह में समाजवादी कार्यकर्ताओं ने जिस तरह सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल हुए उसका खमियाजा उसे भुगतना पड़ा। अखिलेश यादव की तरफ से बहुत अच्छी मेहनत की गई लेकिन परिणाम उनके पक्ष में नहीं रहा। फिर भी अकेले दम पर उन्होंने जो मेहनत की वह प्रशंसनीय है। राज्य में सपा ने 35 फीसदी वोट हासिल करके भी सत्ता में वापसी नहीं कर पाए। 124 सीटों पर संतोष करना पड़ा। लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी 41.3 फीसदी से वोट हासिल कर 274 सीटों पर भगवा लहरा दिया। हालांकि 2017 के मुकाबले भाजपा को 46 सीटों का नुकसान हुआ है जबकि सपा को 70 सीटों का फायदा मिला है।